Page No.:
Date: 23/04/2020

DR. ARVIND JHA
Assit. Prof.
Dept. of Maithili
Marwari College
Darbhanga
M- 9040201409

परिणीता (कथा-संग्रह)

डॉ. वीणा ठाकुर

'चिर-सधवा'

साहित्य आ समाज संग-संग चलैत अछि। साहित्य समाजक दर्पण थिक तऽ समाज सेहो साहित्यक दर्पण थिकैक। कथाकार डॉ. वीणा ठाकुर समाजमे घटित नीक-बेजायके अपन कथाक प्लॉट बनबैत छथि। वर्तमान आर्थिक युगक यथार्थ चित्रण कथाकार चिर-सधवा मे कयने छथि। गोनपुरा टाटा-स्टीलक कारखानामे काज करैत छल जतए ओकर हाथ कटि गेलैक। कारखाना सँ जे टाका भेटलैक से सभ इलाजमे चलि गेलैक, आब बेरोजगार भए गाम बैसल रहल। कहुना घरक खर्च चल रहल छैक। आर्थिक चिन्तामे सतत डूबल रहैत अछि गोनपुरा। ओकर पत्नि लक्ष्मी ओकरा बुझबैत छैक जे, चिन्ता कएला सँ कोन फायदा। कतेक लोक अपाहिज रहैत छैक

Page No.:
Date : / /

Page No.:
Date : / /

पचास [struck] हजार आदि ए पा चार-पाँच
लाख मे डम सँ ठीक आहि। गोपेश। कहलक
जीवन मे पइस संग किछु नहि छिऐक उदा
केलाशला पर ओकर मुजरा कम नहि छैके।
हम उहे साहस किसानक दान लड़ रहल छी
ई ग्रहण बाज लिखा। गोपेश। अपन किसानी
बेभलक आपराधन उड़ गेलकी। दिरन
कहला। बाद डाक्टर एक दिन आओर
अस्पताल मे रहबाक लेल कहलकै। उदा
गोपेश। लक्ष्मी के किछु कहने बिना आपस
गाम चैल। सबको नबलक उदा गोपेश।
नहि मेटल। लक्ष्मी असगरे गाम छुड़ि
आबला। धुम-धुम रहय लागल लक्ष्मी।
प्रतिदिन मीरा टन के बहाना सँ अपन पति क
नवका लेल आबि रहल छिलथि उदा
ओ नहि मेटल। एहि बीच लक्ष्मी टीचर्स
ट्रेनिंग कड एकटा सरकारी स्कूल मे
मास्टरनी भड गेल। उदा साल मे एक
बेर तीरथ सँ मीरा टन क बहने अपन
पति के नबैत रहल। बेटा गोपाल कनेक
बर ओकरा पुछैक माँ पापा कतय किएक
रहैत छै। ओ कहलक माँ जानय नहि छै।
ई सवाल फेर नहि पुछब, बात पर गेला
पर मोरा सबटा रहस्य ज्ञान भड जाइत।
गोपाल पैघ भेल, ओकर [struck] बियाह
दान सह गेलैक। लक्ष्मी सेहो स्कूल सँ
सेवा निवृत्त भड गेल। दलान पर अपन
पोता-पोतीक संग परिवार चलबए लागल।

Scanned with CamScanner

अखनो धरि ओ अपन सधवा रूप धयने अछि आ निर्धारित करैत अछि।

लक्ष्मी आब बूढ़ भऽ गेली। दुःखित रहय लागलि, ओहिठाम घर लोकनि हकारि लक्ष्मी अपन घर-दुआरि के लोग के बजा के कहने छलि- हम कोनो नीक नहि जाइ रहल छी, हम सऽ अपन आराध्य देव के नमन रहलहुँ। हमर मऽ सबसँ पैघ ओहिठाम नीक जगह छला जाहि जगह पर हम दुनिया छोड़ि कऽ आबि गेल छलहुँ। हमरा हमर आराध्य भेटला। जेना हमरा नहि गेला गरीबी सबसँ पैघ अभिशाप होइत छैक आ ताहूसँ पैघ बिमारी जिनकर अविश्वास। पति-पत्नीक संबंध विश्वास पर आधारित होइत छैक। अहाँक पिता के ने अपना पर विश्वास छलनि आने हमरा पर। बेटा अहिना घर हमरा मन्दिरक पुजारीजी हमरा सिखौने छलथि आ कहने छलाह घर जा के रखैलक। बेटा आब हमर माया समापन भऽ गेल। मरलाक बादो हमर आत्मा... हमर माया... समापन...। हम सिर सधवा, बेटा मायक हाथ सँ सिखौने भऽ रखैलक — जीवनक किछु दिन बाँचल अछि। सोचने छलहुँ अहिना दुखी अहाँ लोग रहितहुँ। हुनका आब नहि नीक दिन अहाँ लोक हमरा सँ पैघ टाका छल, हिनकहुँ अपन... कुरवा अहाँ सिर सधवा रहू। गायत्री। “बेटा हम सिर माया पर जा रहल छी।”

—X—

डॉ अरविन्द झा
मो- 9040201409

Scanned with CamScanner